IF : 3.62 | IC Value 70.36

Volume-5, Issue-9, September - 2016 • ISSN No 2277 - 8160

Original Research Paper

Statistics

vu|lfpr tutkfr;k ,o xj tutkfr;k e i tuurk njk dk rqyukRed v/;;u

Raju Ram Koche ¼vFk'kkL=½ 'kk l- ug: Lukrdk- egkfo|k- Mkxjx<]ftyk&jktukanxko ¼N-x-½

Dr. R. N. Singh 'kkl- fnfXot; LukrdksÙkj egkfo|ky; jktukanxko ¼N-x-½

ABSTRACT किसी देश के आर्थिक विकास में मानव संसाधनो या श्रम शक्ति का अहम् योगदान होता है। विद्वानो का ऐसा अनुमान है कि आज से लगभग 20–30 लाख वर्ष पूर्व मानव का इस धरा पर प्रादुभाव हुआ था। प्रारंभ में सन् 1830 तक विश्व की कुल जनसंख्या केवल एक अरब थी, किन्तु अलगे सौ वर्षो में ही अर्थात 1930 तक जनसंख्या दुगूनी हो गई तात्पर्य यह है कि जितनी जनसंख्या वृद्धि लाखो वर्षो में हुई उतनी जनसंख्या मात्र सौ वर्षो में ही हो गई। जनसंख्या वृद्धि की यह दर और दुगूनी हो गई और अगली एक अरब की वृद्धि केवल 30 वर्षो में ही हो गई, इस प्रकार सन् 1960 तक तीन अरब नर–नारी इस धरती पर हो गए। अगले फिर 15 वर्षो में अर्थात 1975 तक जनसंख्या बढ़कर 4 अरब हो गई। विश्व जनसंख्या में पुनः एक अरब की वृद्धि होने में केवल 12 वर्ष ही लगें और 11 जुलाई 1987 को जनसंख्या 5 अरब हो गई, तब से ही 11 जुलाई को प्रति वर्ष विश्व जनसंख्या दिवस के रूप में मनाया जाता है।

यद्यपि किसी भी देश का आर्थिक एवं सामाजिक विकास उस देश की श्रम शक्ति पर निर्भर करता है। श्रम शक्ति उत्पादन का महत्वपूर्ण एवं सक्रिय साधन है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में समाज के दो प्रमुख वर्ग अनुसूचित जनजातियों एवं गैर जनजातियों में प्रजननता दरों का तुलनात्मक अध्ययन कर जनजातियों में पाये जाने वाले उच्च प्रजननता दर के कारणो एवं उनके निदान के उपाय सुझाए गये है।

KEYWORDS : जनसंख्या, प्रजननता दर, जनजातिय एवं गैर जनजातिय, शिक्षा का स्तर, आय का स्तर, सहसम्बंध गुणांक, सम्भाव्यविभ्रम।

ifjp; &

प्रस्तुत शोध अध्ययन में छ0ग0 के राजनांदगांव जिले के जनजातिय विकासखण्ड मानपुर एवं गैर जनजातिय विकासखण्ड डोंगरगढ़ के अनुसूचित जनजातियों एवं गैर जनजातियों में प्रजननता दरों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। शोध अध्ययन से स्पष्ट प्रतीत होता है कि ग्रामीण समाज के जनजातिय परिवारो में प्रजननता दर अपेक्षाकृत अधिक आंकी गई है । इन जनजातिय परिवारो में अधिक प्रजननता दर का प्रमुख कारण इन वर्गो में साक्षरता की कमी, जनजातिय क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं का अभाव जैसे – स्वच्छ पेयजल, शिक्षा, स्वच्छ आवास, चिकित्सा सुविधा का अभाव, पौष्टिक आहार का अभाव एवं आय का स्थायी जरिया न होना आदि है।

v/;;u dk mnns'; &

अध्ययन क्षेत्र के शोध अध्ययन हेतु प्रमुख उद्देश्य निम्नांकित है –

1- अनुसूचित जातियों एवं गैर जनजातियों में प्रजननता दरों का तुलनात्मक अंतर ज्ञात करना।
2- जनजातिय वर्गो में शिक्षा का स्तर एवं प्रजननता दरो में सहसम्बन्ध ज्ञात करना।
3- आय के स्तर में वृद्धि से प्रजननता दरो में परिवर्तन प्रभाव का ज्ञात करना।

"kks/k ifjdYiuk &

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नांकित परिकल्पना की प्रत्याशा की गई है –

1- अनुसूचित जनजातियों में गैर जनजातियों की तुलना में प्रजननता दर अधिक पाई जाती है।
2- शिक्षा के स्तर में वृद्धि के साथ प्रजननता दरो में कमी आती है।
3- आय के स्तर में वृद्धि के साथ प्रजननता दरो में कमी आती है।

vkdM+k dk lkzr ,o v/;;u fof/k &

शोध अध्ययन हेतु जिले के दोनो विकास खण्ड से तीन–तीन ग्राम का चयन कर प्राथमिक आंकड़े संग्रहित किये गए है। शोध हेतु चयनित प्रत्येक ग्राम से 50 परिवार से आंकड़े प्राप्त कर कुल 300 आंकड़े एकत्रित किए गए है। इन दोनो सामाजिक वर्गो से प्राप्त आंकड़ो को विभिन्न आधारो पर जैसे – शिक्षा का स्तर, आय का स्तर, जनजातिय एवं गैर जनजातिय के अनुसार वर्गीकरण एवं सारणीयन कर विश्लेषण एवं तुलनात्मक रूप से प्रजननता दर की प्रवृत्ति का अध्ययन किया गया है।

v/;;u {ks= &

शोध अध्ययन हेतु आंकड़े संग्रहण के लिए छ0ग0 के राजनांदगांव जिले के दो विकासखण्ड का चयन किया गया जिसमें अनुसूचित जनजाति विकास खण्ड मानपुर एवं गैर जनजाति (सामान्य वर्ग) विकास खण्ड के लिए डोंगरगढ़ का चयन किया गया है अनुसूचित जाति बहुल विकास खण्ड मानपुर राजनांदगांव जिला मुख्यालय से लगभग 100 किमी की दूरी पर दक्षिण दिशा में स्थित है। जहां 80 प्रतिषत जनजातिय समाज निवासरत है। जबकि गैर जनजाति (सामान्य बहूल वर्ग) विकासखण्ड डोंगरगढ़ राजनांदगांव जिला मुख्यालय से लगभग 40 किमी. की दूरी पर पश्चिम दिशा में स्थित है, जहां लगभग 75 प्रतिषत गैर जनजातिय सामान्य वर्ग निवास करते हैं।

lkf[;dh rduhdh ,o fo"y'k.k &

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनजातियों एवं गैर जनजातियों में प्रजननता दरों का तुलनात्मक अध्ययन शिक्षा एवं प्रजननता दरो में सहसम्बन्ध तथा आय के स्तर एवं प्रजननता के मध्य सम्बधों के विश्लेषण हेतु काई–वर्ग परीक्षण, सहसम्बध, प्रतीपगमन एवं माध्य आदि सांख्यिकी उपकरणों (तकनीकी) का उपयोग किया गया है।

"kU; ifjdYiuk %&

अनुसूचित जनजातियों में गैर जनजातियों की तुलना में प्रजननता दर अधिक नहीं पायी जाती है।

rkfydk Øekd & 1

सामाजिक वर्ग	महिलाओं की संख्या	प्रजननता विवरण	
		जन्मित बच्चो की संख्या	योग
अनुसूचित जनजाति वि.ख.मानपुर	200	520	720
गैर जनजाति वि.खं.डोंगरगढ़	200	403	603

lkr&ikFkfed led ldyu

उपर्युक्तानुसार काई–वर्ग परीक्षण की गणना के आधार पर 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर 1 कणि के लिऐ ग² का परिकूलित मूल्य 4.5 है जो सारणी मूल्य से अधिक है अतः हमारी शून्य परिकल्पना असत्य सिद्ध पाया जाता है कि अनुसूचित जनजातियों में गैर जनजातियों की तुलना में प्रजननता दर अधिक नहीं होती है। अतः कहा जा सकता है कि अनुसूचित जनजातियों एवं उच्च प्रजननता में घनिष्ठ सम्बध है। अर्थात अनुसूचति जनजातियों में प्रजननता दर गैर जनजातियों की तुलना में अधिक पायी जाती है।

¼2½ ifjdYIkuk Øekd&2 f"k{kk d Lrj ,o ituurk nj e _.kkRed lc/k gkrk gA

rkfydk Øekd&2

f"k{kk dk Lrj ,o vkSlr tUe nj

शिक्षा का स्तर	(कोड)	औसत प्रजनन दर
निरक्षर	1	2.68
प्राथमिक शिक्षा	2	2.43
माध्यमिक शिक्षा	3	2.30
हाईस्कूल	4	2.10
हायर सेकेण्डरी	5	1.87
स्नातक	6	1.88
स्नातकोत्तर	7	1.33

lkr&ikFkfed led ldyu

1ण शिक्षा का स्तर एवं औसत जन्म दर में सहसम्बन्ध त त्र .0ण81

2ण सहसम्बन्ध का सम्भाव्य विभ्रम ;च्ण्म्ण्द्ध त्र 0ण088

उपरोक्तानुसार सहसम्बन्ध गुणांक अपने सम्भाव्य विभ्रम ;च्ण्म्ण्द्ध के 6 गुणा अधिक है। अर्थात ;त त्र . 0ण81झ च्ण्म्ण 0ण088 ग 6द्ध दोनो श्रेणियों में अर्थात शिक्षा का प्रजनता दर के साथ महत्वपूर्ण ऋणात्मक सहसम्बन्ध है। अतः सत्य कहा जा सकता है कि शिक्षा का स्तर एवं प्रजनन दर में महत्वपूर्ण एवं ऋणात्मक सहसम्बन्ध है। शिक्षा के स्तर में बढ़ोतरी के साथ–साथ प्रजननता दर में कमी आती है ।

¼3½ ifjdYiuk Øekd 3 vk; d Lrj ,o ituurk nj e _.kkRed lEcU/k gkrk gA

rkfydk & 3

आय का स्तर	औसत जन्म दर
2000 रू. तक	3.4
4000 " "	3.1
6000 " "	2.8
8000 " "	2.5

10000 ʼʼ ʼʼ	2.1
12000 ʼʼ ʼʼ	1.8
14000 ʼʼ ʼʼ	1.5

lkr&ikFkfed led ldyu

उपरोक्तानुसार आय के स्तर एवं प्रजननता दर में ;तद्ध त्र .0ण्99 उच्च स्तर का ऋणात्मक सहसम्बन्ध है। सहसम्बन्ध गुणांक ;तद्ध त्र .0ण्99 अपने सम्भाव्यविभ्रम (0.005) के छै गुणा (0.03) से अधिक है। अतः दोनो श्रेणियों आय का स्तर एवं औसत प्रजनन दर में महत्वपूण ि सहसम्बन्ध है तथा ऋणात्मक सहसम्बध है। अर्थात ;तद्ध झ च्म्ण्6 गुणे से या ;तद्ध त्र 0.997 झ च्म् 6 त्र ;0ण्03द्ध से। अतः यह परिकल्पना सही सिद्ध होता है कि आय के स्तर में बढ़ोतरी के साथ–साथ प्रजननता दर में कमी आती है।

fu'd'k ,o l>ko %&

शोध अध्ययन से निम्नांकित निष्कर्ष प्राप्त हुऐ है –

1- अनुसूचित जनजातियों में गैर जनजातियों की तुलना में प्रजननता दर अधिक होती है। इसका प्रमुख कारण जनजातियों में विवाह की आयु कम होना, साक्षरता दर कम होना, घोर गरीबी, स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव, कृषि एक मात्र व्यवसाय, आधुनिकता एवं नगरीकरण के प्रभाव से वंचित होना आदि पाये गये है।
2- शोध अध्ययन से यह भी निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि जनजातियों के शैक्षणि ाक स्तर में सुधार के परिणामस्वरूप उनके प्रजननता दर में उत्तरोत्तर कमी आई है अतः यह कहना ज्यादा प्रासंगिक होगा कि शिक्षा के स्तर एवं प्रजननता दर में बहुत घनिष्ठ सहसम्बन्ध पाया गया है यह तथ्य सहसम्बन्ध गुणांक एवं सम्भाव्य विभ्रम परीक्षण से सिद्ध होता हैं।
3- शोध अध्ययन के दौरान यह तथ्य भी पुष्ट होता है कि जनजातियों के आय स्तर में बढ़ोतरी से उनके प्रजनन दर में भी कमी आती है अर्थात आय के स्तर एवं प्रजननता दर में ऋणात्मक संबंध पाया जाता है। इस तथ्य का परीक्षण सहसम्बन्ध गुणांक एवं प्रतीपगमन गुणांक से भी सिद्ध होता है।

l>ko %&

शोध अध्ययन पश्चात् निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत किये जाते है –

1- अनुसूचित जनजातियों के उच्च प्रजननता दर में कमी लाने हेतु उनके शिक्षा स्तर में वृद्धि, घोर गरीबी दूर करने हेतु रोजगार के अवसर, जनजातिय क्षेत्रो में स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार एवं यातायात, संचार सुविधाओं का विस्तार किया जाना चाहिऐ। इस प्रकार जनजातिय वर्ग देश के विकास में सहभागी बनेंगे एवं समाज की मुख्य धारा से जुड़ सकेगे।

2- शासन द्वारा चलायी जा रहीं गर्भवती महिलाओं एवं शिशुओं के कल्याण ाकारी योजनाओं का विस्तार एवं पर्याप्त प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिऐ। जिससे लाभान्वित होने पर उच्च प्रजननता दरो को कम करने में सहायक होगा।

3- शासन द्वारा दी जाने वाली सामाजिक सुरक्षा का विस्तार किया जाय। सामाजिक सुरक्षा के अंतर्गत वृद्धावस्था पेंशन में वृद्धि, निःशुल्क स्वास्थ्य सुविधा का विस्तार, आवास सुविधा आदि उपलब्ध कराया जाना चाहिऐ जिससे जनजातिय वर्गो के उच्च प्रजननता दर को नियंत्रित किया जा सकें।

lUnHk xzFk %&

1. J. R. Goald stein, T. cassidy – 1797 – A cohort model of fertility post ponement – The statistical study of Human Population – A publication of the population association of Amrica . Vol. 50 No. 5 Oct. 2015.
2 A. Gaisis W. Single Rusutom 1821- Child bearing postponment and child well being : A complex and varied Relationship ? – The statistical study of Human Population – A publication of the population association of Amrica . Vol. 50 No. 5 Oct. 2015.
3 E. O. Anant, Gassman – pine C. Gibson Davis – 2015 Community – Wide Job loss Teenage Fertility : Evidence from North cousolina - The statistical study of Human Population – A publication of the population association of Amrica . Vol. 50 No. 5 Oct. 2015.
4 S/ Gorma D. Potan 2105 – Does parental cousent for birth control Affect underage pregnancy rates ? The statistical study of Human Population – A publication of the population association of Amrica . Vol. 50 No. 5 Oct. 2015.
5. मिश्रा, डॉ. जयप्रकाष, जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिकेषन, आगरा।
कुमार, डॉ. विमल, जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिकेषन, आगरा।